केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान

मखदूम, फरह–281 122, मथुरा, उ0प्र0

संस्थान में किसान नवोन्मेषक दिवस (फार्मर्स इन्नोवेशन डे) मनाया गया

दिनांक 30 अप्रैल, 2012 को संस्थान में किसान नवोन्मेषक दिवस (फार्मर्स इन्नोवेशन डे) धूमधाम से मनाया गया। मुख्य कार्यक्रम संस्थान के केन्द्रीय सभागार में प्रातः 10.00 बजे से प्रारम्भ हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि डा. जे.एस. चौहान, निदेशक, सरसों अनुसंधान केन्द्र, भरतपुर, विशिष्ठ अतिथि डा. एस.के. दुबे, प्रभारी, केन्द्रीय लवणता एवं संरक्षण संस्थान, छलेसर, आगरा थे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान निदेशक, डा. देवेन्द्र स्वरूप द्वारा की गयी।

इस कार्यक्रम में देश के प्रत्येक क्षेत्र से लगभग 110 किसानों द्वारा सहभागिता की गयी, इसमें मुख्य रूप में संस्थान द्वारा संचालित अखिल भारतीय बकरी समन्वयन परियोजना (ए.आई.सी.आर.पी.), बीकानेर से पांच, उदयपुर से आठ, भुवनेश्वर से एक, गोहाटी से आठ (सभी महिलाऐं), नवसारी (गुजरात) से पांच, राहुरी (महाराष्ट्र) से चार, रांची से चार, पालमपुर (हिमाचल प्रदेश) से चार तथा एन.ए.आई.पी. परियोजना, बुन्देलखण्ड से 20 किसानों ने सहभागिता की। इसके अतिरिक्त उन्नत एवं व्यवसायिक बकरी पालक के रूप में इन्दौर से श्री दीपक पाठीदार, भोपाल से श्री कर्नल भावस्कर एवं उधम सिंह नगर से श्री के.एल. ठकुराल ने नवोन्मेषक के रूप में भाग लिया। कार्यक्रम आयोजन का मुख्य उद्देश्य किसानों और वैज्ञानिकों के द्वारा बकरी पालन के क्षेत्र में विकसित की गयी नवीन लाभप्रद तकनीकों के विषय में एक दूसरे को जानकारी प्रदान करना है।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुये डा. जे.एस. चौहान द्वारा बताया गया कि पशुओं व कृषि से सम्बन्धित समस्याऐं लगभग एक समान हैं उन्होंने कहा कि भारत सरकार द्वारा तैयार की जाने वाली भावी पंचवर्षीय योजना का निर्माण के दौरान किसान को प्रथम स्थान पर रखा गया है। उनके विचार में इस दिवस के आयोजन का मुख्य उद्देश्य कृषि के हित धारकों को साथ लेकर परिचर्चा किया जाना तथा उनके द्वारा प्रकट किये गये नवोन्मेषी विचारों को योजना में शामिल किया जाना है। उन्होंने कहा कि देश की वर्तमान में मुख्य समस्या जनसंख्या वृद्धि, संसाधनों का अभाव एवं जलवायु परिवर्तन है। पशुओं से अच्छा उत्पादन लेने के लिए पर्याप्त चारा उत्पादित किया जाना अति–आवश्यक है जिसका की सर्वथा अभाव है। तकनीकी के विकास एवं तकनीकी के स्थानान्तरण के मध्य अंतर को कम कराना भी शोध एवं विचार–विमर्श का एक प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए। उन्होंने इस अवसर पर आशा व्यक्त की कि इस कार्यक्रम के द्वारा निकलने वाले परिणाम बकरी पालक किसानों एवं संस्थान के लिए उपयोगी सिद्ध होगें।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये संस्थान निदेशक डा. देवेन्द्र स्वरूप ने कहा कि बकरी पालन का व्यवसाय प्रगतिशील व्यवसायियों व साधन विहिन बकरी पालक किसानों के पास है। बकरी पालन का कार्य विशेष रूप से महिलाऐं करती हैं जोकि उसको अपने दैनिक उपयोग की जरूरत को पूरा करने के लिए ए.टी.एम. की तरह प्रयोग में ला रही है। उन्होंने यह भी बताया कि आसाम की महिलाओं ने बकरियों के रहने के लिए स्वंय उन्नत आवास विकसित किये हैं तथा दक्षिण भारत में बकरियों के काफी बड़े–बड़े फार्म चलाये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस अवसर पर किसानों से हमें नयी जानकारी प्राप्त करके अपने शोध कार्य को रूपान्तरित करते हुये आगे बढ़ाना है। बकरी पालन व्यवसाय में विपणन/विक्रय बहुत बड़ी समस्या है क्योंकि किसानों को उचित विपणन नीति के अभाव में अपनी बकरियों को बिचौलियों के माध्यम से बेचना पड़ता है इससे उचित मूल्य नहीं मिल पाता है। अतः सहकारिता या स्वंय सहायता समूह के माध्यम से विपणन प्रक्रिया को मजबूत करने की आवश्यकता है।